Timax®

मधुर हिंदी

NEP 2020
ENHANCED EDITION

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

8

मधुर हिंदी–8

अध्याय–1. प्रार्थना

(क) 1. रात्रि में चमकते तारे 2. यह मलय पर्वत से आनेवाली ठंडी वायु होती है जो सुखहाई होती है। 3. युवावस्था को 4. श्री जयशंकर प्रसाद **(ख)** 1. उषा प्रातःकाल सूर्य की किरणों को बंटार रही है 2. सूर्य निकलने से पहले ठंडी एवं सुखद हवा चल रही है 3. वे सूर्य की किरणों के दल में छिप जाते 4. पक्षियों के चहचहाहट का अनुभव करना। **(ग)** स्वयं करे। **(घ)** 1. जय शंकर प्रसाद 2. एक पर्वत 3. ओस की बूँदें। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–2. स्नेह

(क) 1. शशि का पक्ष लेने हेतु 2. जब उमा ने शशि को बचाने हेतु अपने बच्चे को दाँव पर लगा दिया। 3. जब उसी ने शशि के बदले अपने पुत्र को उसके चरणों में रख दिया तो वह गहन सोच में पड़ गई तथा मूर्ति सी बनी रही। 4. वह निरूपता से अत्यंत दुःखी थी। 5. बेचैन या व्याकुल। **(ख)** 1. वह एक अनाथ था। 2. वह चिल्ला उठा, ''बहुरानी! मैं अब भी कहती हूँ, तुम शशि से कोई मतलब न रख?'' 3. वह उससे अधिक प्यार करती थी। 4. वह दो दिनों से भूखा था इसलिए उसने मिठाई चुराई थी। 5. उसने दूसरे मकान में रहने का निर्णय लिया। 6. क्योंकि हो सकता है कि इस क्रिया से निरूपमा का स्वभाव बदल जाए। **(ग)** 1. पूजा घर 2. अशोक 3. निरुपमा **(घ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–3. बीजःपेड़-पौधों की संतान

(क) 1. घनिष्ठ 2. जड़ के द्वारा 3. मधुमक्खियों और तितलियों से 4. प्रकाश के द्वारा ही उसकी वृद्धि संभव है। **(ख)** 1. पौधे का अंकुर बाहर निकलने पर जो अंश मिट्टी के भीतर प्रवेश करता है, वह जड़ है। जो ऊपर की ओर बढ़ता है, उसे तना कहते हैं। सभी पेड़-पौधों में जड़ और तना ये दो भाग होते हैं। 2. पेड़-पौधे के दाँत नहीं होते, इसलिए वे केवल तरल द्रव्य या वायु से भोजन ग्रहण करते हैं। 3. पेड़ के पत्ते वायु से आहार ग्रहण करते हैं। पत्तों में अनगिनत छोटे-छोटे मुँह होते हैं। 4. जो जीव-जंतुओं के लिए ज़हर है, पेड़-पौधे उसी का सेवन करके उसे पूर्णतया शुद्ध कर देते हैं। 5. मधुमक्खियाँ एक फूल के पराग-कण दूसरे फूल पर ले जाती हैं। पराग कण के बिना बीज पक नहीं सकता। **(ग)** 1. बीज 2. इससे वे बढ़ते हैं 3. सूर्य 4. मिट्टी से **(घ)** 1. जड़ 2. तरल, वायु 3. पेड़ 4. बीज 5. परागकण **(ङ)** 1. (ii) 2. (i) 3.

(iv) 4. (v) 5. (iii) **(च)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–4. चचा छक्कन

(क) 1. चची चचा छक्कन से कई बार कह चुकी हैं, कि बाहर तुम्हारा जो मन करे, किया करो, मगर खुदा के लिए घर के किसी काम में दख़ल न दिया करो। 2. हर काम में टाँग अड़ाने की 3. चचा की 4. कमीज की पहचान हेतु 5. चचा की कमीज में सोने के बटन रह गए थे। जिसे लेकर धोबिन जा चुकी थी। जिसे लेने हेतु वे बाहर भागे। **(ख)** 1. मैले कपड़े निकालते समय 2. कपड़े की कुल संख्या पर 3. क्योंकि वे एक काम करने के लिए घर के सारे सदस्यों को परेशान करते थे। 4. उनकी तबीयत खराब थी। 5. इसका कारण था कि उन्होंने उससे अपने बूट साफ किए थे तथा जो काफी गंदी लग रही थी। **(ग)** 1. घर के काम के लिए 2. आठवें दिन 3. छुट्टन की 4. उनसठ 5. मिट्ठू को **(घ)** 1. चची ने धोबिन से 2. धोबिन ने चचा से 3. चचा ने बुंदू से 4. चची ने चचा से **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–5. शक्ति और क्षमा

(क) 1. युधिष्ठिर ने 2. नर व्याय 3. सिंधु ने **(ख)** 1. क्योंकि वह बाध के समान कुकृत्य करता था। 2. वह पाण्डवों का कभी भला नहीं चाहता था। 3. उन्हें सेना सहित लंका पर चढ़ाई कर माता सीता को धुड़ाना था। उन्हें समुद्र से मार्ग चाहिए था। 4. जो नर वीर और साहसी होते हैं। 5. युद्ध में पीधे हटना कायरता है, क्षमाशीलता नहीं। जैसे को तैसा की नीति अपनानी चाहिए। **(ग)** 1. प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहता है कि अगर आपके पास बाहु बल, धन बल या जन बल है तभी आपको लोग विनती करते हैं तथा उस विनती को महत्ता होती है। 2. प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि सहनशीलता, क्षमा, दया उस व्यक्ति को शोभा देता है जिसमें सामने वाले से अधिक शक्ति होती है। अगर कोई कमजोर व्यक्ति शक्तिशाली व्यक्ति को कहे कि मैंने उसे क्षमाकर दिया तो हँसी का पात्र बनता है। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–6. मंत्र

(क) 1. एक गरीब आदमी 2. दो बच्चे–एक लड़का और एक लड़की। 3. भगत ने। **(ख)** 1. अपने बीमार लड़के की चिकित्सा करने हेतु। 2. उसने साँप की गर्दन जोर से दबा दी थी। जिससे वह क्रोधित होकर उसे काट लिया था। 3. उसके कर्त्तव्यपरायणता के गुण के कारण। 4. क्योंकि वह नहीं चाहता था कि कोई उसके उपकार को धन देकर तौले। **(ग)** 1. गोल्फ़ 2. कैलाश 3. कोबरा साँप ने 4. भगत नामक बूढ़े ने **(घ)**

1. भगत 2. मरीज 3. भगत 4. पगड़ी 5. ईश्वर **(ङ)** 1. आज कल पढ़े को लिखे लोगों को अपनी विद्‌वता एवं धन के आगे मानवता का गुण तुच्छ लगता है लेकिन समय पर अनपढ़ और गरीब कर्तव्यनिष्ठ भी अपनी सोच से उसे नीचा दिखला देता है। 2. बूढ़े के मन में डॉक्टर के प्रति उपेक्षा की भावना थी लेकिन कर्तव्य के आगे वह छोटी पड़ गई। उसने अपना कर्त्तव्य निभाया। 3. ईश्वर दयालु है। उसी के हाथ में जीवन-मरण, यश और अपयश होता है। बूढ़े भगत को अपने ईश्वर एवं नि:स्वार्थ कर्त्तव्य पर पूर्ण भरोसा था। **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय-7. गंगा की महिमा

(क) 1. जन समाज की माला 2. यमुना 3. पद्‌मा 4. जनक, अशोक, बुद्‌ध और महावीर **(ख)** 1. गंगा तो आर्य जाति की माता है। आर्यों के बड़े-बड़े साम्राज्य इसी नदी के तट पर स्थापित हुए हैं। कुरु-पांचाल देश का अंग-बंग आदि देशों के साथ गंगा ने ही संयोग किया है। आज भी हिंदुस्तान की आबादी गंगा के तट पर सबसे अधिक है। 2. इसकी दिशा अनेक स्थानों पर बदलती रहने के कारण इसे अनेक मुखी कहा गया है। 3. नदी का किनारा यानी शुद्‌ध और शीतल हवा। यदि नदी के किनारे-किनारे घूमने जाएँ, तो प्रकृति के मातृवात्सल्य के अखंड प्रवाह का दर्शन होता है। नदी बड़ी हो और उसका प्रवाह धीर-गंभीर हो, तब तो उसके किनारे पर रहनेवालों की संपन्नता उस नदी पर ही निर्भर करती है। सचमुच नदी जनसमाज की माता है। 4. जब हम गंगा का दर्शन करते हैं, तब हमारे ध्यान में सिर्फ़ फसल से लहलहाते खेत ही नहीं आते, न सिर्फ़ माल से लदे जहाज़ ही आते हैं, अपितु वाल्मीकि का काव्य, बुद्‌ध-महावीर के विहार और चैत्य, अशोक, समुद्रगुप्त या हर्ष जैसे सम्राटों के पराक्रम और तुलसीदास या कबीर जैसे संतजनों के भजन-इन सबका एक साथ स्मरण हो आता है। 5. हिंदुस्तान में अनगिनत नदियाँ हैं, इसलिए संगमों का भी कोई अंत नहीं है। इन सभी संगमों में हमारे पुरखों ने गंगा-यमुना का यह संगम सबसे अधिक पसंद किया है, और इसीलिए उसका 'प्रयागराज' जैसा गौरवपूर्ण नाम रखा है। (ग) 1. गंगा 2. प्रयाग 3. द्रौपदी 4. रास्ता 5. गंगा, ब्रह्मपुत्र **(घ)** 1. (ii) 2. (iii) 3. (v) 4. (i) 5. (iv) **(ङ)** 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓ **(च)** 1. गंगा तो आर्य जाति की माता है। आर्यों के बड़े-बड़े साम्राज्य इसी नदी के तट पर स्थापित हुए हैं। कुरु-पांचाल देश का अंग-बंग आदि देशों के साथ गंगा ने ही संयोग किया है। आज भी हिंदुस्तान की आबादी गंगा के तट पर सबसे अधिक है। 2. अनेकमुखी गंगा हमें हमेंशा से अनेक

प्रकार से समृद्धि प्रदान करती आ रहीं है लेकिन हम उतनी समृद्धि को एकत्र करने में असमर्थ होते हैं। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–8. सुभाषचंद्र बोस के पत्र

(क) 1. यह पत्र सुभाषचंद्र बोस ने श्री केलकरजी को मांडले सेंट्रल जेल, अपर वर्मा से लिखा। 2. अन्य जेलों की तरह यह ऐसा तीर्थस्थल है, जहाँ भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्षों तक रहा था। 3. लोकमान्य तिलक **(ख)** 1. बरहमपुर जेल बंगाल से, मांडले जेल में 2. वह लकड़ी के तख़्तों से बना है, जिसमें गरमी में लू और धूप से, वर्षा में पानी से तथा शीत ऋतु में सरदी से बचाव नहीं हो पाता। 3. मेरे यहाँ पहुँचने के कुछ ही क्षण बाद मुझे उस वार्ड का परिचय दे दिया गया। मुझे यह बात अच्छी नहीं लग रही थी, कि मुझे भारत से निष्कासित कर दिया गया था, लेकिन मैंने भगवान को धन्यवाद दिया, कि मांडले में अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात् अनुपस्थिति के बावजूद मुझे पवित्र स्मृतियाँ राहत और प्रेरणा देंगी। 4. जो महापुरुष मधुमेह से पीड़ित होने के बावजूद इतने सुदीर्घ कारावास को झेलता गया और फिर भी जिसने अपनी समस्त बौद्धिक क्षमता एवं संघर्ष–शक्ति को अक्षुण्ण बनाए रखा और जिसने उन अंधकारमय दिनों में अपनी मातृभूमि के लिए ऐसी अमूल्य भेंट तैयार की, उसे विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम पंक्ति में स्थान मिलना चाहिए। 5. केवल लोकमान्य जैसा दार्शनिक ही, जिसे अदम्य इच्छाशक्ति का वरदान मिला था। उस बंदी जीवन के शक्ति हननकारी प्रभावों से बच सकता था, उस मंत्रगा और दासता के बीच मानसिक संतुलन बनाए रख सकता था और गीता भाष्य जैसे विशाल एवं युग–निर्माण कारी ग्रंथ की प्रणयन कर सकता था। **(ग)** 1. बंगाल में 2. लोकमान्य तिलक ने 3. मधुमेह 4. छह वर्ष **(घ)** 1. लोकमान्य तिलक 2. किताबें 3. दंड संहिता 4. विश्व 5. डूबा **(ङ)** 1. जब लोकमान्य यहाँ थे, मांडले का मौसम तब भी प्रायः ऐसा रहा होगा, जैसा वह आजकल है और अगर आज नौजवानों को शिकायत है कि वहाँ की जलवायु शिथिल कर देने वाली और मंदाग्नि तथा गठिया को जन्म देने वाली है और धीरे–धीरे, पर अटूट रूप में वह व्यक्ति की जीवन–शक्ति को सोख लेती है, तो लोकमान्य ने, जो वयोवृद्ध थे, कितना कष्ट झेला होगा। 2. यह विश्व भगवान की कृति है, लेकिन जेलें मानव के कृतित्व की निशानी हैं। उनकी अपनी एक अलग ही दुनिया है और सभ्य समाज ने जिन विचारों और संस्कारों को प्रतिबद्ध होकर स्वीकार किया है, वे जेलों में लागू नहीं होते। अपनी आत्मा के ह्रास के बिना बंदी–जीवन के प्रति अपने आपको

अनुकूल बना पाना आसान काम नहीं है। इसके लिए हमें पिछली आदतें छोड़नी होती हैं और फिर भी स्वास्थ्य और स्फूर्ति बनाए रखनी होती है। सभी तरह के नियमों के आगे नत होना होता है और फिर भी आंतरिक प्रफुल्लता अक्षुण रखनी होती है। **भाषा की बात**–स्वयं करे।

अध्याय–9. नेहरूजी की रोमांचक यात्रा

(क) 1. अमरनाथ की गुफा 2. लेखक ने जब जोजी–ला घाटी की चोटी से देखा, तो एक ओर नीचे की ओर पहाड़ों पर घनी हरियाली थी और दूसरी ओर नंगी खड़ी चट्टान। वे उस घाटी की सँकरी तह के ऊपर चढ़ते चले गए, जिसके दोनों ओर पहाड़ हैं। एक ओर बर्फ़ से ढकी हुई चोटियाँ चमक रहीं थीं और उनमें से छोटे–छोटे ग्लेशियर (हिम सरोवर) उनसे मिलने के लिए नीचे रेंग रहे थे। हवा ठंडी और कष्टदायक थी। 3. एक छोटा सा दल और गाइड 4. हम लोगों ने सोचा कि चढ़ाई समाप्त होने से हमारी कठिनाइयाँ भी समाप्त हो गई होंगी, इसलिए बहुत थके होने पर भी हम लोगों ने हँसते हुए यात्रा की यह मंज़िल भी तय करनी शुरू की। **(ख)** 1. मेरी शादी सन् 1916 में, दिल्ली में, बसंतपंचमी को हुई थी। उस वर्ष गरमी में हमने कुछ महीने कश्मीर में बिताए। मैंने अपने परिवार को तो श्रीनगर की घाटी में छोड़ दिया और अपने एक चचेरे भाई के साथ कई सप्ताह तक पहाड़ों में घूमता रहा तथा लद्दाख रोड तक बढ़ता चला गया। 2. इस यात्रा में मुझे दिल कँपा देने वाला एक अनुभव हुआ। जोजी–ला घाटी से आगे यात्रा करते हुए एक जगह हमसे कहा गया, कि अमरनाथ की गुफ़ा वहाँ से सिर्फ़ आठ मील दूर है। यह ठीक था कि बीच में हिम से ढका हुआ एक बड़ा पहाड़ पड़ता था, जिसे पार करना था। लेकिन इससे क्या? आठ मील होते ही क्या हैं? जोश खूब था और अनुभव नदारद। 3. रस्सियों के हुक में एक–दूसरे से बँधे हुए उन्होंने बर्फ़ीली नदियों को पार करना शुरू किया। उसकी मुश्किलें बढ़ती गईं तथा साँस लेने में भी कठिनाई मालूम होने लगी। उनके कुछ सामान उठाने वालों के मुँह से खून निकलने लगा हालाँकि उन पर बहुत बोझ नहीं था। उधर बर्फ़ पड़ने लगी और बर्फ़ीली नदियाँ भयानक रूप से रपटीली हो गईं। 4. उन्हें एक विशाल हिम सरोवर देखने का पुरस्कार मिला। 5. इसमें बड़ा धोखा था, क्योंकि यहाँ बहुत–सी दरारें थीं और ताज़ी गिरने वाली बर्फ़ खतरनाक दरारों को ढक देती थी। **(ग)** 1. 1916 में 2. 8 मील 3. बर्फ़ीली नदियों के कारण **(घ)** 1. सूनापन 2. वनस्पतियों 3. दिल 4. गाइड 5. पुरस्कार **(ङ)** 1. प्राय: उन्हें चीज़ों की दूरी के बारे में भ्रम होता था, वे उन्हें उससे बहुत कम दूर

समझते थे। धीरे-धीरे सूनापन बढ़ता गया। पेड़ों और वनस्पतियों तक ने उनका साथ छोड़ दिया। सिर्फ़ नंगी चट्टान, बर्फ़ और पाला कभी-कभी कुछ सुंदर फूल रह गए। फिर भी प्रकृति के इन जंगली और सुनसान स्थानों में उन्हें अजीब संतोष मिला। उनके उत्साह और उमंग का ठिकाना न था। 2. इसमें बड़ा धोखा था, क्योंकि यहाँ बहुत-सी दरारें थीं और ताज़ी गिरने वाली बर्फ़ खतरनाक दरारों को ढक देती थी। लेखक ने ज्योंही उसके ऊपर पैर रखा, वह नीचे खिसक गई और वह धम्म से मुँह के बल एक बड़ी दरार में जा गिरा। यह दरार बहुत बड़ी थी। कोई भी वस्तु उसमें बिलकुल नीचे पहुँचकर हज़ारों वर्ष बाद तक भूगर्भ-शास्त्रियों की खोज के लिए आराम के साथ सुरक्षित रह सकती थी, लेकिन उसके हाथ से रस्सी नहीं छूटी और उसे अंततः ऊपर खींच लिया गया। **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय-10. राम वनगमन

(क) 1. हे सुमुखि! कहो तो अपनी सुंदरता से करोड़ों काम देवों को लजाने वाले में तुम्हारे कौन हैं? 2. ये जो सहज स्वभाव, सुंदर और गोरे शरीर के हैं, उनका नाम लक्ष्मण है, ये मेरे छोटे देवर हैं। 3. खंजन पक्षी के समान सुंदर नेत्रों को तिरछा करके सीताजी ने इशारे से उन्हें कहा कि ये मेरे पति हैं। 4. उन्होंने कोमल वाणी से लोगों से रास्ता पूछा। 5. वन का रास्ता पूछने पर वे दुखी हो गए। **(ख)** 1. प्रेम के प्यासे ग्रामवाली उनके सुकोमल शरीर को देखकर तथा उन्हें बन जाते देखकर चंकित रह गए। 2. श्याम और गौर वणं है, सुंदर किशोर अवस्था हैं, दोनों ही परम सुंदर और शोभा के धाम हैं। शरद पूर्णियो के समान इनके मुख और शरद ऋतु के कमल के समान इनके नेत्र है। 3. ये दोनों राज कुमार कौन हैं। कृपया हमें इनके बारे में बताइए। 4. ये दोनों राजकुमार कौन हैं? ये सुंदर और गोरे शरीर वाले हमारे देवर लक्षण हैं तथा आँखों के इशारे से श्री रामचन्द्र जी को अपना पति बताया। 5. उनका आनन्द मिट गया और कर्म की गति समझकर उन्होंने धैर्य धारण किया। **(ग)** व **(घ)** स्वयं करे। **भाषा की बात**-स्वयं करें।

अध्याय-11. संस्कृति और सभ्यता

(क) 1. बहुत बार सभ्यता और संस्कृति लगभग एक-सी दिखाई देती हैं, किंतु वह एक नहीं हैं। सभ्यता वह वस्तु है, जो हमारे पास है। संस्कृति वह वस्तु है, जो हम स्वयं हैं। 2. लेखक के अनुसार कल-कारखाने, मोटर, महल, सड़क और हवाई जहाज़ तथा भोजन व पोशाक, ये संस्कृति नहीं, सभ्यता के उपकरण हैं। 3. भोजन करने और

पोशाक पहनने में हम जिस रुचि का परिचय देते हैं, वह हमारी संस्कृति है। 4. ये ऋषि सभ्यता के कोलाहल से दूर वनों में रहते थे, वल्कल पहनते थे, मिट्टी के बरतनों में भोजन पकाकर केलों के पत्तों पर खाते थे और अपने हाथ से छोटा काम करने में उन्हें शर्म नहीं आती थी। **(ख)** 1. प्रत्येक सुसभ्य व्यक्ति सुसंस्कृत नहीं होता है, क्योंकि संस्कृति का निवास मोटर, महल और पोशाक में नहीं, मनुष्य के हृदय में होता है। बहुत-से ऐसे लोग हैं, जो अच्छी पोशाक में होने पर भी स्वभाव से निम्न होते हैं और स्वभाव से निम्न होना संस्कृति के विरुद्ध बात है और बहुत-से ऐसे लोग भी हैं, जिनके पास मोटर और महल तो क्या, अच्छी पोशाकों का भी अभाव है। किंतु उनमें दया, शील-सौजन्य एवं परोपकार की भावना की कमी नहीं है। 2. सभ्यता वह वस्तु है, जो हमारे पास है। संस्कृति वह वस्तु है, जो हम स्वयं हैं। कल-कारखाने, मोटर, महल, सड़क और हवाई जहाज़ तथा भोजन व पोशाक, ये संस्कृति नहीं, सभ्यता के उपकरण हैं। 3. क्रोध करना प्रकृति है। किंतु क्रोध को रोककर रखना संस्कृति है। काम का उल्लंघ-आचार प्रकृति है। किंतु काम को बँधे घाट में बहाना संस्कृति है। 4. गाँधीजी शुद्ध धार्मिक पुरुष थे, जिन्हें राजनीति के वेश में रहना पड़ा। वे देह के उत्सव में भूले हुए मनुष्य को आत्मा की याद दिलाने आए थे। 5. गाँधीजी भारत के धार्मिक इतिहास के प्रतीक थे और हमारे इतिहास ने अपने को जीवित और चैतन्य सिद्ध करने के लिए ही उन्हें उत्पन्न किया था। वे यदि नहीं आते, तो भारत का इतिहास झूठा हो गया होता। हिंसा से पीड़ित विश्व में अहिंसा की ज्योति जलाकर, वे हमारे इतिहास को आगामी सदियों के लिए जीवित कर गए हैं। प्रत्येक भारतवासी का धर्म है, कि वह गाँधी को समझे, क्योंकि गाँधी भारतवर्ष की सबसे नवीन टीका है। **(ग)** 1. उपरोक्त दोनों 2. वनों में 3. संस्कृति 4. महात्मा गाँधी 5. विनम्रता (घ) 1. सभ्यता 2. संस्कृति 3. शहरीपन 4. प्रकृति 5. मनुष्य की आत्मा की चीज **(ङ)** 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ **(च)** 1. (ii) 2. (iv) 3. (i) 4. (v) 5. (iii) **(छ)** 1. सभ्यता वह वस्तु है, जो हमारे पास है। संस्कृति वह वस्तु है, जो हम स्वयं हैं। कल-कारखाने, मोटर, महल, सड़क और हवाई जहाज़ तथा भोजन व पोशाक, ये संस्कृति नहीं, सभ्यता के उपकरण हैं। 2. दुनिया में आज भी ऐसे समृद्ध देश हैं, जहाँ समाज में सम्मान पाने के लिए कवियों को भी मोटर और धन की आवश्यकता होती है। अवश्य ये वे देश हैं, जहाँ सभ्यता संस्कृति के माथे पर चढ़ बैठी है। 3. ये ऋषि सभ्यता के कोलाहल से दूर वनों में रहते थे, वल्कल पहनते थे, मिट्टी के बरतनों में भोजन पकाकर केलों के पत्तों पर

खाते थे और अपने हाथ से छोटा काम करने में उन्हें शर्म नहीं आती थी। आज की परिभाषा के अनुसार इन ऋषियों को सभ्यता की सीमा में गिनना थोड़ा कठिन काम होगा। किंतु वे इतने सुसंस्कृत थे, कि सारे इतिहास में उनका जोड़ नहीं मिलता। 4. क्रोध करना प्रकृति है। किंतु क्रोध को रोककर रखना संस्कृति है। 5. 'गाँधीजी विज्ञान के द्रोही थे'–यह बात भी कही जाने के योग्य नहीं है। दुनिया में बहुत-से ऐसे राजनीतिज्ञ हुए हैं, जो धर्म के परिधान में छिपकर चलते थे। गाँधीजी शुद्ध धार्मिक पुरुष थे, जिन्हें राजनीति के वेश में रहना पड़ा। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–12. जहाँनारा

(क) 1. ये उनके पुत्र और पुत्री थे। 2. शाही मुहर लगा हुक्तनामा 3. अपने पिता के साथ क्योंकि उसकी देखभाल करने वाला कोई न था। 4. क्योंकि उसे रानी का पद दे दिया गया था। **(ख)** 1. वह तो बाप का सिंहासन नहीं लेना चाहता था, उनके हुक्म से सल्तनत का काम चलाता था। 2. वह रानी के रूप में पिता की सेविका बन कर जी रही थी। 3. उसने शासन की बागडोर अपने हाथ में लेकर उसे अपने भाइयों से बचाने की मरसक कोशिश की। 4. नहीं **(ग)** 1. पुत्री 2. औरंगज़ेब का भाई 3. रानी 4. शाहजहाँ का सेनापति **(घ)** 1. दासी 2. किला 3. सिंहासन 4. जादूगरनी 5. महानता **(ङ)** 1. जहाँनारा ने औरंगजेब की क्रूरता को देखकर बोली की दारा तो बाप का सिंहासन नहीं लेना चाहता था, उनके हुक्म से सल्तनत का काम चलाता था। 2. मेरी तलवार मुझे दे दो। जब तक वह हाथ में रहेगी, कोई भी मेरा सिंहासन न छीन सकेगा। हाँ जहाँपनाह! ऐसा ही होगा। शाहजहाँ को अपनी तलवार पर भरोसा था। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–13. राष्ट्रपति की चिंताएँ

(क) 1. राजेन्द्र प्रसाद से, श्री के० एम० मुंशी को 2. राजेन्द्र प्रसाद से क्योंकि उनकी फसलें नष्ट हो गई थीं। 3. टिड्डियों ने उसे बरबाद कर दिया था। 4. कुछ दिनों से मैं इस बात पर विचार कर रहा हूँ कि किस प्रकार हम अपने देश की ललित कलाओं–संगीत, चित्रकला इत्यादि को बढ़ावा दे सकते हैं। **(ख)** 1. संगीत, चित्रकला आदि को। 2. पुरस्कार-वितरण तथा संगीत, नृत्य, वादन, गायन या अन्य से संबंधित नियमों के निर्धारण के लिए विशेषज्ञों की एक कमेटी नियुक्त की जा सकती है। 3. पहले भारतीय रजवाड़े तथा कुछ बड़े ज़मींदार कुछ ऐसे कलाकारों को अपने दरबार में स्थान देकर इनका भरण-पोषण करते थे। यद्यपि इस व्यवस्था का दुरुपयोग भी होता था, फिर भी कुल मिलाकर यह कलाकारों को प्रोत्साहन देने का काम करता था। 4.

मेरा विचार है कि प्रतिवर्ष उत्कृष्ट कलाकारों को अखिल भारतीय मैडल, खिलअत तथा कुछ नगद के रूप में पुरस्कार देने की प्रथा आरंभ करना उचित होगा। 5. ये प्रतियोगिताएँ हम विभिन्न राज्यों में प्रारंभ कर सकते हैं। राज्यों द्वारा चुने गए श्रेष्ठ कलाकार आकर दिल्ली में अपनी कला का प्रदर्शन करें और उनमें से सर्वश्रेष्ठ कलाकारों को प्रतिवर्ष पुरस्कार दिए जाएँ। **(ग)** 1. डॉ० राजेंद्र प्रसाद 2. खाद्य एवं कृषि मंत्री 3. ये दोनों 4. नई दिल्ली में **(घ)** 1. टिड्डियों 2. व्यवस्था 3. मौसम 4. मारवाड़ी 5. राजस्थान **(ङ)** 1. (iv) 2. (iii) 3. (i) 4. (v) 5. (ii) **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–14. जमशेद जी नसरवान टाटा

(क) 1. भारतीय कपास से बने सस्ती दर पर खरीदे गए इन मिलों के कपड़े भारत में बहुत ऊँचे दामों पर बेचे जाते हैं। 2. 1877 में 3. उन्होंने दूसरी बार इंग्लैंड की यात्रा की। उन्होंने वहाँ कपास मिल और उसके व्यापार का अध्ययन किया और पाया, कि भारतीय कपास से बने सस्ती दर पर खरीदे गए इन मिलों के कपड़े भारत में बहुत ऊँचे दामों पर बेचे जाते हैं। इस बात से उन्हें बहुत दु:ख हुआ। जमशेद जी ने दृढ़ निश्चय किया, कि वे ऐसी मिलें भारत में भी खोलेंगे। 4. जो संपदा भूमि से खोदकर निकाली जाती है। **(ख)** 1. अध्ययन के पश्चात् वे एक वकील के साथ काम करने लगे, लेकिन यहाँ उनका मन नहीं लगा। उन्होंने वकील का कार्यालय छोड़ दिया तथा पिता के व्यवसाय में हाथ बँटाने लगे। पिता के साथ रहकर जमशेद जी ने बहुत जल्द ही व्यवसाय की बारीकियों को समझ लिया। 2. 21000 रूपये से 3. (i) कपास के खेत के समीप मिल स्थापित करना। (ii) मिल रेलवे जंक्शन के समीप हो। (iii) मिल के पास पानी और ईंधन की उपलब्धि हो। 4. अपने पुत्र को एक पत्र में सन् 1902 ई० में उन्होंने लिखा था, ''जब इस्पात मिल की स्थापना हो, तब यह कार्य निश्चय रूप में करना कि मिल में काम करने वाले कर्मचारियों के लिए एक साफ़ और सुंदर शहर हो, जिसमें चौड़ी सड़कें हों। सड़कों के किनारे वृक्ष, बाग–बगीचे, खेलों के मैदान हों तथा मंदिर, मस्जिद और गिरजाघरों के लिए स्थान निर्धारित हों।'' बिहार में साकची गाँव के घने जंगलों को साफ़ करके 'टाटा आयरन एंड स्टील मिल्स' स्थापित किया गया। अब यह क्षेत्र एक महानगर के रूप में बदल गया है और इसका नाम जमशेदपुर रखा गया है। 5. अपने जीवनकाल में जमशेद जी अपने एक ही स्वप्न को पूरा कर सके, वह था– 4. 21 करोड़ की लागत वाला मुंबई में स्थित ताज होटल जो सन् 1903 ई० में बना। इस

होटल की विशेषता यह थी, कि यह भारत में पहला होटल था जिसमें बिजली थी, अमेरिका से लाए गए पंखे थे, जर्मनी से लाई गई लिफ़्ट थी, तुर्की से लाए हुए स्नानघर के बाथ टब थे और जिसमें अंग्रेज बटलर और वेटर काम करते थे। **(ग)** 1. एल्फ़िस्टन में 2. 1904 ई० में 3. पुत्र 4. बैंग्लुरु में **(घ)** 1. (ii) 2. (iii) 3. (i) 4. (v) 5. (iv) **(ङ)** 1. इकलौती 2. मुंबई 3. हीराबाई 4. अनुभव 5. इस्पात मिल भाषा की बात–स्वयं करें।

अध्याय–15. कुंडलियाँ

(क) 1. गुण के क्योंकि गुण के बिना किसी की पूछ नहीं होती। 2. बिना विचारे काम करने से 3. वे स्वयं को बड़ा समझने लगते हैं। **(ख)** 1. दौलत किसी के यहाँ अधिक दिनों तक नहीं रहती। 2. दौलत आने पर अभिमान नहीं करना चाहिए क्योंकि यह किसी के पास स्थिर नहीं रहती है। 3. मीठे वचन से, क्योंकि इससे आपका सम्मान बढ़ती है। 4. अच्छी तरह सोच-विचार कर 5. दोनों के रंग एक होते हुए भी कोयल को मीठी बोली के कारण अधिक पसंद किया जाता है। **(ग)** स्वयं करें। **(घ)** 1. (iii) 2. (i) 3. (iv) 4. (v) 5. (ii) **(ङ)** 1. दौलत चंचला होती है। इस पर अभिमान नहीं करना चाहिए। 2. कोयल और कौए का रंग एक होते हुए भी कौए को उसकी कड़वी बोली के कारण अपवित्र माना जाता है। 3. बिना विचारे काम करने पर, काम बिगड़ जाने से जग में हँसाई होती है जिससे मन बेचैन हो जाता है तथा किसी काम में मन नहीं लगता। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–16. भिखारिन की महानता

(क) 1. एक अंधी प्रतिदिन मंदिर के दरवाज़े पर जाकर खड़ी होती थी। 2. सेठ के पास 3. बनारसी दास 4. अपने पैसे लेने हेतु **(ख)** 1. सेठ बनारसीदास बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति थे। बच्चा-बच्चा उनकी कोठी से परिचित था। वे बहुत बड़े देशभक्त और धर्मात्मा थे। उनकी कोठी पर हर समय लोगों की भीड़ लगी रहती थी। 2. उसके पास काफ़ी रुपये हो गए थे। हाँड़ी लगभग पूरी भर गई थी। उसको शंका थी कि कोई उसको चुरा न ले। 3. क्योंकि वही उसका खोया हुआ पुत्र था। 4. अंधी को देखे बिना उसका बेटा बेचैन था। 5. उसने अपने पुत्र और अपनी दौलत सेठ को सौंप दी। **(ग)** 1. 10 वर्ष पहले 2. मोहन 3. बुढ़िया की सेवा से **(घ)** 1. दुआएँ, सहृदयता 2. झिड़कियाँ 3. रहस्यमयी 4. टाट, अश्रुधारा 5. ममता **(ङ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗ **(च)** 1. भिखारिन ने, सेठ से 2. सेठ ने, भिखारिन से 3. मुनीम ने, सेठ से 4. सेठ ने,

भिखारिन से **(छ)** 1. जब सेठ ने अंधी को पैसे लौटाने से मनाकर दिया तो उसने कहा कि भगवान तुम्हें ओर दे। 2. बच्चे को अत्यंत तेज बुखार था तथा अंधी को इससे काफी दुख भी हो रहा था। 3. सेठ भिखारिन के पास अपने पुत्र को देखने के लिए भिखारी के समान अनुनय कर रहा था। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–17. जल का साम्राज्य

(क) 1. मेरे लिए वर्षा–ऋतु का आकाश यानी आर्ट–गैलरी! स्लाइड–गैलरी! बादल मानो आकाश में टँगी सजीव कलाकृतियाँ! जीवन से धड़कती, ऊपर से कूदती, नदी–नालों को छलकाती, धरा को शीतलता प्रदान करती, मैदानों को हरा–भरा करती और अपने आपको न्यौछावर करती सजीव कलाकृतियाँ! 2. हज़ारों वर्षों से वर्षा–ऋतु में नदी–तट के निवासियों को बाढ़ का प्रकोप भी झेलना पड़ता था। नदी का पानी उफन पड़ता और तट–बंधों को तोड़ता हुआ गाँव के गाँव बहा ले जाता था। आदमी और नदी के बीच यह लड़ाई चलती रहती। कभी एक पक्ष की जीत होती, तो कभी दूसरे की। लोग अपने घरौंदे बनाते और नदी उन्हें नष्ट कर देती। लोग इस लड़ाई से ऊब गए। आखिर उन्होंने नदी पर बाँध बनाना सीख लिया। 3. तरल 4. नदी में घुले रसायन कॉलरा, टायफ़ाइड और दस्त जैसी बीमारियाँ फैलाते हैं। **(ख)** 1. ऐसा नहीं है, कि समुद्र (मंथन) से एक ही बार अमृत निकला था। अमृत हर बार निकलता है और वर्षा के रूप में पूरी धरती पर बरसता है। 2. सूर्य की गरमी से तपकर समुद्र का पानी भाप बनता है। निराकार भाप ऊपर जाकर साकार बादल में ढल जाती है। 3. नदी के कारण कृषि संभव हुई। जो शिकारी था, वह किसान बन गया। उसे शिकार की भागदौड़ से मुक्ति मिली। वह एक जगह घर बसाकर कला, धर्म, अध्यात्म, विज्ञान और साहित्य की ओर अग्रसर हो सका। इससे मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण मोड़ आया। 4. रसायनों, उर्वरकों, कीटनाशकों, कारखानों के अशोधित अपशिष्टों और शहरों के हज़ारों टन अशोधित मल के कारण नदियाँ विषाक्त हो रही हैं। कारखानों से निकलने वाला कई टन कचरा भी नदियों में डाला जाता है। यह आत्मघाती कदम है। 5. हज़ारों वर्षों से मनुष्य नदी की ओर खिंचता चला आया है। केवल इसलिए नहीं कि वह हमारी और हमारे खेतों की प्यास बुझाती है, बल्कि इसलिए भी कि वह हमारी आत्मा को भी तृप्त करती है। संसार की सभी प्रमुख संस्कृतियों का जन्म नदियों की कोख से हुआ है। भारतीय संस्कृति गंगा की देन है। **(ग)** 1. समुद्र 2. पहाड़ और वन 3. बादलों 4. नदियों 5. नदियों **(घ)** 1. इस धरती पर हम मेहमान ही तो हैं। हमारे आगमन के समय

यह जैसी थी, अगर जाते समय इसे कुछ और अच्छी न बना सकें, तो कम से कम इसे खराब करके तो न जाएँ। 2. अंत में नदी समुद्र से जा मिलती है। पानी जहाँ से चला था, वापस वहीं पहुँच गया। नदी कभी न समाप्त होने वाली एक निरंतर रचना है। एक ऐसी शक्ति है, जो नित्य पुनर्जीवित होती रहती है। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–18. बड़े भाई साहब

(क) 1. नौवीं कक्षा में 2. प्रेमचंद 3. प्रेमचंद 4. अभिमान के कारण **(ख)** 1. रावण भू–मंडल का स्वामी था। ऐसे राजाओं को चक्रवर्ती कहते हैं। 2. सफ़ल खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशाना खाली न जाए। 3. मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक कक्षा का अंतर और रह गया। मेरे मन में एक कुटिल भावना उदय हुई, कि कहीं भाई साहब एक साल और फ़ेल हो जाएँ, तो मैं उनके बराबर हो जाऊँ, फिर वह किस आधार पर मेरी फज़ीहत कर सकेंगे; लेकिन मैंने इस विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला। आखिर वे मुझे मेरे हित के विचार से ही डाँटते हैं। मुझे उस वक्त अप्रिय लगते हैं अवश्य, मगर शायद यह उनके उपदेशों का ही असर हो, कि मैं इतने अच्छे नंबरों से लगातार पास होता जाता हूँ। 4. बड़े भाई का दायित्व भली भाँति निभाना। **(ग)** 1. रचनाओं 2. बातें 3. निपुण 4. निबंध 5. आदेश **(घ)** 1. पढ़ाई के समय हमें वास्तविक ज्ञान का समझना चाहिए। 2. मैं छोटा था वे बड़े थे। उनके जितनी समझ मुझमें नहीं थी। 3. आदमी को अपनी उम्र के अनुसार स्वयं को ढालना लेना चाहिए। 4. समझ व्यवहारिक ज्ञान से आती है। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–19. दान–बल

(क) 1. पुण्य की प्राप्ति 2. वह सूख कर नीचे गिर जाएगा। 3. उसका कार्य व्यापार दान है। 4. जब आप स्वार्थी हो जाते हैं। **(ख)** 1. सरिता वाष्प बनकर बादल को जल तथा बादल जल बन कर सरिता को जल देते हैं। 2. जब आप स्वयं को सामने वाले से अधिक धनवान समझ बैठते हैं। 3. यह प्रकृति का कार्य व्यवहार है अगर आप दान नहीं करेंगे तो वह नष्ट हो जाएगा। 4. क्योंकि प्रकृति की सारी चीजें दूसरों के लिए होती है। 5. वे आत्मघाती बन जाते हैं। **(ग)** स्वयं करें। **(घ)** 1. (iv) 2. (v) 3. (i) 4. (ii) 5. (iii) **(ङ)** 1. यह प्रकृति का नियम है कि सभी जीवों को एक न एक दिन इस पृथ्वी को छोड़कर जाना होता है। 2. देते रहने से आपके पास किसी वस्तु के रखने की जगह रहती है उसी प्रकार यही वृक्ष फल नहीं देंगे तो डालियाँ अस्वस्थ हो जाएँगी। इसलिए त्याग जीवन का एक सत्य है। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–20. नारी

(क) 1. हमारे बाल्यकाल में जब घर से बाहर निकलना होता था, तो स्त्रियों के लिए पालकी में बैठना अनिवार्य था। प्रतिष्ठित परिवारों में पालकी के ऊपर परदा डाल दिया जाता था। 2. बंद पालकी का वह युग आज बहुत दूर चला गया है– वह धीरे–धीरे नहीं गया, उसने बड़ी तेज़ी से प्रस्थान किया है। 3. घर–परिवार की छोटी परिधि में जब तक स्त्रियों का जीवन आबद्ध था, तब नारी मन की स्वाभाविक प्रवृत्तियों से सहज ही उनके सब काम संपन्न हो जाते थे। गृहस्थी के काम के लिए किसी विशेष शिक्षा की ज़रूरत नहीं थी। **(ख)** 1. क्योंकि उन्हें गृहस्थ जीवन में किसी विशेष शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी। 2. आजकल प्राय: सभी देशों में स्त्रियाँ अपने व्यक्तिगत संसार की सीमाओं को पार करके बाहर निकल रही हैं। इसका प्रधान कारण यह है, कि आज सर्वत्र सीमाओं को तोड़ने का युग आ पहुँचा है। जो देश अपने भौगोलिक और राजनैतिक प्राचीरों से आबद्ध थे, उन्हें पहले की तरह घेरकर रखना आज संभव नहीं है। 3. जीवन के प्रशस्त मार्ग पर खड़े होकर नारी का मन नए सिरे से विचार करने लगता है, पुराने संस्कारों को जाँचने का काम अपने–आप आरंभ हो जाता है। इस अवस्था में वह तरह–तरह की गलतियाँ कर सकती है, लेकिन बाधाओं के धक्के खाते–खाते वह गलतियों को सुधार भी लेती है। संकीर्ण सीमाओं में विचार करने की आदत को यदि न छोड़ा जाए, तो चारों दिशाओं में पग–पग पर असामंजस्य का सामना करना पड़ता है। 4. घर–परिवार की छोटी परिधि में जब तक स्त्रियों का जीवन आबद्ध था, तब नारी मन की स्वाभाविक प्रवृत्तियों से सहज ही उनके सब काम संपन्न हो जाते थे। गृहस्थी के काम के लिए किसी विशेष शिक्षा की ज़रूरत नहीं थी। इसीलिए एक दिन स्त्री शिक्षा का इतना विरोध और उपहास किया गया। 5. आज पृथ्वी पर सर्वत्र स्त्रियाँ घर की चौखट को पार करके विश्व के उन्मुक्त प्रांगण में प्रवेश कर रही हैं। इस वृहत संसार का दायित्व आज उन्हें स्वीकार करना ही होगा। ऐसा न कर पाना असफ़लता है। मैं सोचता हूँ, आज दुनिया में नया युग आ पहुँचा है। दीर्घकाल तक मानव सभ्यता की व्यवस्था पुरुषों के हाथ में थी। इस सभ्यता की राजनीति, अर्थनीति और समाज–शासनतंत्र की रचना पुरुषों ने की। स्त्रियाँ प्रकाशहीन अंतराल में रहकर घर का काम करती रहीं। यह सभ्यता एकांगी थी, इसमें मानवचित्त की संपदा को क्षति पहुँची है। **(ग)** 1. पालकी 2. परिवर्तन 3. चित्त 4. महानदी 5. भूकंप **(घ)** 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗ **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–21. चंद्रगुप्त

(क) 1. एक विद्वान ब्राह्मण 2. एक चतुर बालक, बाद में राजा 3. मुरा 4. नंद एक राजा थे **(ख)** 1. मंत्री जी! पूरे राज्य में ढिंढोरा पिटवा दीजिए, कि मगध का शासन चंद्रगुप्त के हाथ में आ गया है। आज से मेरे शासन में जिस प्रजा को कोई भी कष्ट हो, वह मेरे पास आए। मैं उसके साथ पूर्ण न्याय करूँगा। मेरी प्रजा के लिए मेरे राज्य का द्वार हर समय खुला हुआ है। 2. महाराज! मैं मगध के राजा नंद के दरबार से आया हूँ। मेरी राजा के साथ कुछ अनबन हो गई है इसलिए मैं आपके पास आया हूँ। मैं अत्यंत गरीब ब्राह्मण हूँ। महाराज! आपसे कुछ याचना करना चाहता हूँ। 3. महाराज! इस पिंजरे की छड़ों को गरम करने की व्यवस्था करवाएँ। **नंद**–इससे क्या होगा? **चंद्रगुप्त**–महाराज! यह मोम का बना हुआ शेर है। पिंजरे की छड़ों को गरम करने से मोम का शेर पिघल जाएगा। 4. चंद्रगुप्त के नाम पर क्योंकि उसमें राजा के सभी गुण थे। 5. **चाणक्य**–हाँ महाराज! मैं और मेरा आशीर्वाद हमेशा आपके साथ है। मेरी सारी शक्ति और राजनीति आपके लिए ही है। **(ग)** 1. प्रजा 2. प्रजाजनों 3. ब्राह्मण 4. नंद 5. प्रतिशोध **(घ)** 1. द्वारपाल ने, चंद्रगुप्त से 2. चाणक्य ने, चंद्रगुप्त से 3. नंद ने, चाणक्य से 4. चाणक्य ने, नंद से 5. चाणक्य ने, नंद से **भाषा की बात**–स्वयं करें।

अध्याय–22. जीवन नहीं मरा करता है

(क) 1. भविष्य की योजना 2. जब आप किसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए मरसक प्रयत्न करते हैं 3. वह माला को गुँथ न सका। **(ख)** 1. परिवर्तन तो चलता रहता था 2. उसके पास कई उगलियाँ टूटती फूटती रहती हैं। 3. माली ने फूल तोड़ने पर क्या उपवन की शोभा खत्म हो जाती है। पनघट पर गगारियों के टूटने से क्या वह दुखी होता है। 4. हो सकता है कि आपके लिए कोई और सपना पूरा होने वाला हो। 5. हमें निरंतर कर्मरत और प्रयासरत रहना चाहिए। **(ग)** स्वयं करें। **(घ)** 1. जीवन में सुख-दुख आते-जाते रहते हैं। हमें हर परिस्थिति में स्वयं को संतुलित रखना चाहिए। 2. जीवन में कई बार कठिन परिस्थितियाँ आती है यदि हम उनसे घबरा जाएँगे तो हम आगे आने वाले जीवन को कैसे संभालेंगे। 3. माली के उपवन से फूल तोड़ लेने पर क्या फूलों की सुगंध खत्म हो जाती है अर्थात् नहीं। कठिन परिस्थितियों का हमें डटकर सामना करना चाहिए। यह भी जीवन का एक अंग है। **भाषा की बात**–स्वयं करें।

मधुर हिंदी

Interactive Resources

- Download the free app 'Green Book House' from google play.
- Free online support available on 'www.greenbookhouse.com'.
- Ample teacher's support available.

GREEN BOOK HOUSE
(EDUCATIONAL PUBLISHER)
F-214, Laxmi Nagar, Mangal Bazar, Delhi-110092
Phone : 9354766041, 9354445227
E-mail : greenbookhouse214@gmail.com
Website: www.greenbookhouse.com